दिवस खास त्योहार

(बाल कविता संग्रह)

● सत्यवीर नाहड़िया

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335 देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001

इस पुस्तक का कोई भी अंश, लेखक की पूर्वानुमति
के बिना प्रयोग निषेध है।

ISBN	:	"978-81-946288-7-3"
सर्वाधिकार ©	:	सत्यवीर नाहड़िया
मूल्य	:	₹100/-
प्रथम संस्करण	:	जुलाई, 2020
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन, 335, देवनगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-25001 मोबाइल नंः 9599323508 Website: www.samdarshiprakashan.com Email: samdarshi.prakashan@gmail.com
आवरण एवं सज्जा	:	योगेश समदर्शी
मुद्रक	:	थॉमसन प्रेस

वर्षभर दिवस विशेष पर
इन रचनाओं को स्वर-संगीत
देने वाले सभी कलाकारों,
शिक्षकों एवं विद्यार्थियों
की रचनात्मकता
को सादर...

अनुक्रम

चलती-फिरती पाठशाला लगती कृति...	7
सोद्देश्यपूर्ण कविताएँ	11
हर दिन...एक नया दिन हो !	14
नववर्ष	15
राष्ट्रीय युवा दिवस	16
लोहड़ी	17
मकर संक्रांति	18
भारतीय थल सेना दिवस	19
बालिका दिवस	20
मतदाता दिवस	21
गणतंत्र दिवस	22
नशा मुक्ति दिवस	23
विश्व कैंसर दिवस	24
वसंत-पंचमी	25
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	26
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	27
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	28
होली	29
विश्व जल दिवस	30
शहीदी दिवस	31
नव संवत्सर	32
मूर्ख-दिवस	33
रामनवमी	34
वैशाखी	35
विश्व पुस्तक दिवस	36
मजदूर-दिवस	37
बुद्ध-पूर्णिमा	38
मातृ-दिवस	39
ईद-उल-फितर	40
निर्जला एकादशी	41
विश्व पर्यावरण दिवस	42
विश्व योग दिवस	43
विश्व संगीत दिवस	44

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस	45
गुरु-पूर्णिमा	46
जनसंख्या दिवस	47
कारगिल विजय दिवस	48
रक्षाबंधन	49
संस्कृत-दिवस	50
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	51
गोगा नवमी	52
स्वतंत्रता दिवस	53
राष्ट्रीय खेल दिवस	54
शिक्षक-दिवस	55
हिंदी दिवस	56
हरियाणा वीर शहीदी दिवस	57
वायुसेना दिवस	58
राष्ट्रीय एकता दिवस	59
दशहरा	60
हरियाणा दिवस	61
राष्ट्रीय शिक्षा दिवस	62
बाल दिवस	63
राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस	64
करवा चौथ	65
दीपावली	66
गोवर्धन पूजा/अन्नकूट	67
भैया दूज	68
छठ पूजा	69
संविधान दिवस	70
विश्व एड्स दिवस	71
भारतीय नौसेना दिवस	72
राष्ट्रीय गणित दिवस	73
गीता जयंती	74
क्रिसमस	75
सुशासन दिवस	76

भूमिका

चलती-फिरती पाठशाला लगती कृति 'दिवस खास त्योहार'

हिंदी बाल साहित्य में बाल काव्य के अंतर्गत शिशुगीत, बालगीत, मुक्तक, लोरी, प्रभाती, दोहे, पद्य कथाएं तो लिखी ही गयी हैं, बाल कविता भी अपने विविध विषयों के साथ उपलब्ध है। भारतवर्ष विविधताओं का देश है। यहाँ हर रोज कोई न कोई महत्त्वपूर्ण दिवस, पर्व अथवा त्योहार अपनी सतरंगी छटा बिखेरता रहता है। बच्चों के लिए इनके महत्त्व को कदापि नकारा नहीं जा सकता है, क्योंकि यही हमारी संस्कृति भी है।

कवि सत्यवीर नाहड़िया हिंदी एवं हरियाणवी भाषा के एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनकी रागनी, दोहा, कुंडलिया, आल्हा एवं अन्य विधाओं में नौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'दिवस खास त्योहार' सत्यवीर नाहड़िया की नवीनतम कृति है, जिसमें वर्ष भर में आने वाले पर्व/त्योहार एवं दिवस के अवसरों पर लिखी छोटी-छोटी रोचक बाल कविताएँ समाहित की गयी हैं।

जनवरी माह में नववर्ष, राष्ट्रीय युवा दिवस, लोहड़ी, मकर संक्रांति, भारतीय थल सेना दिवस, बालिका दिवस, मतदाता दिवस, गणतंत्र दिवस एवं नशामुक्ति दिवस का शुभागमन होता है। बालिकाओं का गुणगान करने वाली कविता 'बालिका दिवस' की कुछ पंक्तियां हैं-

रखती सबका ध्यान बेटियाँ।
लोकलाज की आन बेटियाँ।
घर के आँगन की हैं कोयल-
बड़ी सुरीली तान बेटियाँ।।

फरवरी माह के अंतर्गत आने वाले खास दिवस अथवा पर्व/त्योहार होते हैं- विश्व कैंसर दिवस, वसंत पंचमी, अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस और राष्ट्रीय विज्ञान दिवस। 'नशा मुक्ति दिवस' कविता की पंक्तियाँ हैं-

आओ जन-जन को समझाएँ।
नशा करें ना, नशा छुड़ाएँ।
नशा मुक्त हो देश हमारा-
आओ मिलकर नशा मिटाएँ।।

मार्च माह के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, होली, विश्व जल दिवस एवं शहीदी दिवस की धूम मची रहती है। 'शहीदी दिवस' की कुछ पंक्तियाँ क्या खूब बन पड़ी हैं-

सुखदेव-राजगुरु की यारी।
रही भगत को जी से प्यारी।
गोरों से थी लड़ी लड़ाई-
फाँसी भी थी जिनसे हारी।।

नव संवत्सर, मूर्ख दिवस, राम नवमी एवं वैशाखी आदि अप्रैल माह में आते हैं। 'राम नवमी' कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

राम-नाम की महिमा न्यारी।
राम पूत थे आज्ञाकारी।
राजतिलक की जगह वनों में-
भोगी विपदा पग-पग भारी।।

मई माह में जो दिवस अथवा पर्व/त्योहार पड़ते हैं, वे हैं- मजदूर दिवस, बुद्ध पूर्णिमा, मदर्स-डे, ईद-उल-फितर तथा निर्जला एकादशी। 'मातृ-दिवस' कविता में माँ की महिमा देखिए-

माँ ममता की प्यारी मूरत।
माँ समता की न्यारी मूरत।

माँ से बौने देव सभी हैं-
हर देवी पर भारी मूरत।।

विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व योग दिवस व विश्व संगीत दिवस का आगमन जून माह में होता है। योग के महत्त्व को रेखांकित करती हुई कविता 'विश्व योग दिवस' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

योग सभी को पार उतारे।
सच्चा योगी कभी न हारे।
योग एक है जीवन शैली-
तन-मन-जीवन योग निखारे।।

जुलाई माह में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस, गुरु पूर्णिमा, जनसंख्या दिवस तथा कारगिल विजय दिवस का बोलबाला रहता है। गुरु के महत्त्व को बताती कविता 'गुरु पूर्णिमा' की पंक्तियाँ हैं-

गुरु बिन मान नहीं है संभव।
गुरु बिन ध्यान नहीं है संभव।
गुरु बिन संभव क्या बोलो जब-
गुरु बिन ज्ञान नहीं है संभव।।

इसी प्रकार अगस्त माह में रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गोगा नवमी, स्वतंत्रता दिवस व राष्ट्रीय खेल दिवस की आवाजाही लगी रहती है। 'राष्ट्रीय खेल दिवस' में खेलों का महत्त्व वर्णित है। देखिए-

खेलों से निखरे यह जीवन।
खेलों से चहके यह तन-मन।
स्वस्थ हमें ये खेल बनाएँ-
खेलों से आता अनुशासन।।

सितम्बर माह में शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, हरियाणा वीर शहीदी दिवस आते हैं। अक्तूबर माह में वायुसेना दिवस, राष्ट्रीय एकता दिवस और दशहरा मनाया जाता है। हरियाणा दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, बाल दिवस, राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस, करवा चौथ, दीपावली, गोवर्धन पूजा, छठ पूजा, भैयादूज तथा संविधान दिवस नवम्बर माह में आने वाले दिवस व त्योहार हैं। दिसम्बर माह में विश्व एड्स दिवस, भारतीय नौ सेना दिवस, राष्ट्रीय गणित दिवस, गीता जयंती, क्रिसमस

और सुशासन दिवस अपनी छटा बिखेरते हैं।

प्रत्येक दिवस अथवा पर्व/त्योहार पर लिखी गयी व कविता सरस, रोचक एवं बोधगम्य बन पड़ी है। यदि बच्चे खेल-खेल में इनको कंठस्थ करके इनके भावों को आत्मसात् कर पाएं तो कवि का प्रयास सफल होगा। मेरी ओर से कवि सत्यवीर नाहड़िया को बहुत-बहुत बधाई।

शुभकामनाओं सहित-

8 मई 2020

-डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
(हिंदी अकादमी दिल्ली से सम्मानित)
785/8, अशोक विहार,
गुरुग्राम-122006 (हरियाणा)
संपर्क सूत्रः 9210456666

सोद्देश्यपूर्ण कविताएँ

'नए दौर में नई कहानी लिखने का' आह्वान करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शिक्षाविद्, विविध विधाओं के सशक्त हस्ताक्षर और कुशल मंच संचालक सत्यवीर नाहड़िया की प्रेरक बाल कविताओं का संग्रह है 'दिवस खास त्योहार'। वर्ष के खास दिनों-त्योहारों पर आधारित तीन-तीन पदों वाली ये कविताएँ बाल-मन के बहुत निकट हैं।

बाल साहित्य लिखने से पहले बाल मनोविज्ञान को समझना होता है। इस दृष्टि से कवि ने कवि धर्म निभाने की सफल कोशिश की है। सरलता, सहजता, बोधगम्यता व गेयता इन रचनाओं के विशेष गुण हैं। बच्चे इन्हें आसानी से कंठस्थ कर सकते हैं। ये बच्चे को उस परिवेश से जोड़ती हैं, जिसमें वह खेलता-कूदता, नाचता-गाता और सोचता-समझता है। इन कविताओं से गुजरते हुए ऐसा लगता है जैसे बच्चों के साथ बच्चा बनकर त्योहार मनाने हेतु कवि स्वयं भी शामिल हो गया है तथा त्योहारों को मौज-मस्ती से मनाने का आह्वान किया है-

आओ झूमें-नाचें गाएँ।
आओ मिलकर पर्व मनाएँ।

बालिका दिवस कविता की गेयता देखते ही बनती है-

आन-बान अरु शान बेटियाँ।
गढ़ती निज पहचान बेटियाँ।
जब-जब मौका उन्हें मिला है-
भरती नई उड़ान बेटियाँ।

हर प्रकार के भेदभाव से ऊपर उठकर मिल-जुलकर उत्सव मनाने का आनन्द अनूठा है, इसलिए कवि ने अधिकतर कविताओं में, मिलकर पर्व मनाने की, टेर लगाई है। साथ ही राष्ट्र-चिंतन, संसाधनों का संरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण, वृक्षारोपण, रोग सम्बन्धी भ्रम-निवारण, संगीत व योग की महिमा, शहीदों के प्रति कृतज्ञता, गुरु का मान, साक्षरता को बढ़ावा देने, स्वभाषा अपनाने, रिश्तों का सम्मान करने, खेलों का महत्त्व जानने आदि को इनका वर्ण्य विषय बनाया है।

मानवता हित संकल्पशील होने की कामना स्वरूप कहा है-

दीन-दुखी की सेवा कर हम-
मानवता के घाव भरेंगे।

बुराइयों से बचने के लिए चेतना का पैगाम सुनाया है-

आओ जन-जन को समझाएँ।
नशा करें ना, नशा छुड़ाएँ।

विज्ञान के ज्ञान के सदुपयोग के पक्ष में कहा गया है-

मानवता के लिए ज्ञान हो-
मिलकर यह संकल्प उठाएँ।

मजदूर दिवस कविता बिम्बात्मकता का अच्छा उदाहरण है-

पग-पग बोझा सिर पर ढोना।
नहीं दुखों का रोना रोना।
सोता-सोता रहे जागता-
जगे-जगे भी पड़ता सोना।

आज के बच्चे कल के मतदाता हैं। मतदाता के रूप में अपनी भावी जिम्मेदारी तथा वोट का महत्त्व बाल्यकाल से ही उनकी समझ का हिस्सा बने, इस मकसद से लिखी गई पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

मतदाता इक जिम्मेदारी।
मतदाता की महिमा न्यारी।

मतदाता की खास भूमिका-
मतदाता ही बदले पारी।

एक तथा नेक रहकर देश की एकता-अखंडता का संदेश सुनाने वाला यह संग्रह विद्यालयों के पुस्तकालयों का हिस्सा बन सके तो अधिकाधिक विद्यार्थी इन रचनाओं से लाभान्वित हो सकते हैं। ये सोद्देश्यपूर्ण कविताएँ बाल पाठकों की सोच को विस्तार देंगी और उनसे आत्मीय रिश्ता बनाएँगी, ऐसा विश्वास है।

कामना करती हूँ, सत्यवीर नाहड़िया अपने काव्य-सुमनों से नित माँ भारती का शृंगार करते रहें। कवि को पुनः-पुनः बधाई एवं शुभाशीष।

-कृष्णलता यादव

30 अप्रैल, 2020

(संरक्षक- हरियाणा प्रादेशिक
हिन्दी लघुकथा मंच, गुरुग्राम)
677 सैक्टर 10, गुरुग्राम 122001
संपर्क सूत्र- 9811642789

हर दिन...एक नया दिन हो!

वैसे तो 'वसुधैव कुटम्बकम्' के वर्तमान दौर में सालभर हर दिन किसी दिवस विशेष के रूप में नामित है, किंतु भारतीय शैक्षणिक कैलेण्डर में मनाए जाने वाले दिवस विशेष तथा तीज-त्योहार इस बालकृति के मूल विषय रखे गए हैं।

गत दो दशकों से शिक्षा विभाग में अध्यापन के दौरान प्रार्थना सभाओं एवं बालसभाओं में संबंधित अवसरों पर विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी ये बाल कविताएँ नयी पीढ़ी को प्रेरित करेंगी-ऐसी आशा है।

शताधिक पुस्तकें बालसाहित्य में दे चुके देश के चर्चित साहित्यकार डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कृष्णलता यादव का मैं कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने न केवल इस पुस्तक की भूमिका के रूप में आशीर्वाद दिया, अपितु अमूल्य सुझाव भी दिए। समदर्शी प्रकाशन, मेरठ के प्रणेता एवं साहित्य मनीषी समदर्शी जी के आभार बिना यह कृति अधूरी रहेगी। विषय चयन में प्रेरक सहयोगी रहीं मेरी जीवनसाथी श्रीमती गीता, तकनीकी सहयोग करने वाले बेटे सत्यगीत, बिटिया आस्था के साथ सभी परिजनों का उत्साहवर्द्धन मायने रखता है।

हर दिन का अपना महत्त्व होता है, जिससे हमें नयी ऊर्जा एवं प्रेरणा मिलती है। हर दिन-एक नया दिन हो, रचनात्मक हो, आइए... ऐसा संकल्प इन रचनाओं से जुड़कर लें तथा समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें- ऐसी प्रार्थना है।

-सत्यवीर नाहड़िया

26 अप्रैल, 2020

नववर्ष

(1 जनवरी)

एक जनवरी का दिन आया।
नया जोश दुनिया में छाया।
नये साल का नया रंग है-
नया तराना दिल ने गाया।।

आओ झूमें, नाचें-गाएँ।
नया साल यह खूब मनाएँ।
करें कामना सारे मिलकर-
जो सोचा है वह सब पाएँ।।

नये साल में नया करेंगे।
विपदाओं से नहीं डरेंगे।
दीन-दुखी की सेवा कर हम-
मानवता के घाव भरेंगे।।

○○

राष्ट्रीय युवा दिवस

(12 जनवरी)

युवा दिवस हम आज मनाएँ।
मिलकर यह संकल्प उठाएँ।
कभी जोश में होश न खोएँ-
आगे-आगे बढ़ते जाएँ।।

युवा, जोश का नाम बताया।
युवा, शक्ति का धाम बताया।
युवा, नाम है नव जीवन का-
युवा, नहीं यों आम बताया।।

नये दौर के हम हैं तारे।
नहीं मुसीबत से हम हारे।
हैं आदर्श हमारे सच्चे-
एक विवेकानंद सितारे।।

❍❍

लोहड़ी

(13 जनवरी)

आज लोहड़ी का दिन आया।
जन-जन का है मन हर्षाया।
गली-गली में ढोल बजे तो-
गिद्दा-भँगड़ा मिलकर पाया।।

आओ मिलकर पर्व मनाएँ।
पूजा ख़ातिर आग जलाएँ।
बाँट रेवड़ी, गज्जक-पट्टी-
साथ तिलों का भोग लगाएँ।।

फसल पकी है, घर पर आनी।
सर्दी भी है बस अब जानी।
तभी लोहड़ी होगी पूरी-
दुल्ला-भट्टी कहो कहानी।।

○○

मकर संक्रांति

(15 जनवरी)

सूर्य उपासना का दिन आया।
उत्तरायण हो सूर्य छाया।
मकर-राशि में देता दस्तक-
पर्व लोक का यह बतलाया।।

रूप बताए इसके न्यारे।
बिहु-खिचड़ी अरु माघी प्यारे।
दक्षिण में पोंगल हैं कहते-
उत्तरायणी उत्सव सारे।।

दान-मान का पर्व निराला।
दाल-चूरमा की भज माला।
बहुत सताया था सर्दी ने-
होय पर्व से इसका टाला।।

❍❍

भारतीय थल सेना दिवस

(15 जनवरी)

हर विपदा पर पड़ती भारी।
कभी नहीं बैरी से हारी।
आन-बान अरु शान देश की-
सबसे न्यारी, फौज हमारी।।

सीमा की करती रखवाली।
युद्ध बीच हर आन संभाली।
पड़े आपदा, आगे पाए-
थल सेना है बड़ी निराली।।

आओ इसका मान बढ़ाएँ।
मिलकर गान आज हम गाएँ।
शाबाशी दें हम वीरों को-
थल-सेना का दिवस मनाएँ।।

❍❍

बालिका दिवस

(24 जनवरी)

आन-बान अरु शान बेटियाँ।
गढ़ती नित पहचान बेटियाँ।
जब-जब मौका उन्हें मिला है-
भरती नयी उड़ान बेटियाँ।।

जननी की हैं आस बेटियाँ।
बाबुल का विश्वास बेटियाँ।
दो-दो कुल की शोभा होती-
रचतीं नित इतिहास बेटियाँ।।

रखती सबका ध्यान बेटियाँ।
लोकलाज की आन बेटियाँ।
घर के आँगन की हैं कोयल-
बड़ी सुरीली तान बेटियाँ।।

○○

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।